फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

सुरक्षा-संतुष्टि-तृप्ति दावे हैं, मात्र दावे हैं आज प्रचार के । व्यापक स्तर पर छिछला, सतही, पीड़ादायक जीवन आज की वास्तविकता है ।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी
फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 253 1/- जुलाई 2009

उथल-पुथल, बढती उथल-पुथल

★ ***बांग्लादेश*** में फिर मजदूरों का गुस्सा फूट पड़ा । बांग्लादेश के मध्य क्षेत्र में एक कारखाने में बकाया तनखा, वेतन वृद्धि और नौकरी पर बहाली के विवाद ने 27 जून को हिंसक रूप ले लिया । कुछ साहबों की पिटाई हुई । पुलिस ने मजदूरों की भीड़ को तितर-बितर करने के लिये आँसू गैस के गोले छोड़े । मजदूरों ने राष्ट्रीय राजमार्ग बन्द कर दिया । पुलिस के सहायक बल (अन्सार) ने गोलियाँ चलाई । एक मजदूर की मृत्यु । कई फैक्ट्रियों के मजदूर सड़कों पर निकल आये । कुछ मैनेजमेन्टों ने डर से जल्दी छुट्टी कर दी । जहाँ से यह विवाद शुरू हुआ था उस कारखाने को मजदूरों ने आग लगा दी । मजदूर की हत्या के विरोध में 28 जून को बांग्लादेश में जगह-जगह प्रदर्शन हुये । और फिर 29 जून को मजदूरों के गुस्से का विस्फोट हुआ । राजधानी ढाका के औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों और पुलिस के बीच तीखी झड़पें हुई । आक्रोश से भरे मजदूरों की सँख्या पचास हजार हुई तो कारखानों की सुरक्षा के लिये बुलाये गये अतिरिक्त 400 पुलिस वाले भी एक तरफ हट गये । ढाका क्षेत्र में अधिकतर मजदूर सड़कों पर थे लेकिन कुछ फैक्ट्रियों में काम जारी था । वे फैक्ट्रियाँ मजदूरों के आक्रमण का निशाना बनी और पचास कारखानों में आग लगा दी गई । सरकार ने खुँखार विशेष दस्तों को भेज कर मजदूरों के इस असन्तोष पर काबू पाया । (जानकारियाँ रॅट मारुट के इन्टरनेट पर लेख से <www.libcom.org>)

★ जून माह में ही ***भारत*** में किसानों और दस्तकारों पर एक उल्लेखनीय क्षेत्र में सरकार ने हमला बोला । आठ महीने से पश्चिम बंगाल के लालगढ क्षेत्र में 30 गाँवों के गरीबों ने सरकार को ही नकार रखा था । इससे तिलमिलाई सत्ता ने सशस्त्र राज्य पुलिस, केन्द्र की सी आर पी एफ तथा बी एस एफ और विशेष दस्तों का गठजोड़ बनाया । और वायुसेना के गनों से लैस हैलीकोप्टरों की सहायता से लालगढ क्षेत्र में दस्तकारों-किसानों पर आक्रमण ।

●बद से बदतर होते हालात में उथल-पुथल, बढती उथल-पुथल स्वाभाविक है । समाज में यह पाँच-सात हजार वर्ष से हो रहा है । पृथ्वी के छिटपुट क्षेत्रों से आरम्भ हुई यह प्रक्रिया इन पाँच सौ वर्ष में अधिकाधिक विश्व-व्यापी बनती आई है ।

हिंसा और प्रतिहिंसा, जायज हिंसा और नाजायज हिंसा, शान्ति और अहिंसा के आवरण में बढती हिंसा के चक्रव्यूह में हम फँसे हैं । इससे एक व्यक्ति पचास व्यक्तित्वों में विभाजित होने को अभिशप्त है । आज प्रत्येक अपने तन व मन को काटने में लगा है । हर कोई अपने इर्द-गिर्द वालों को लहुलुहान करने में लगी है । पीड़ा के पहाड़ हर व्यक्ति को बम में बदल रहे हैं । इन दो सौ वर्षों में चक्रव्यूह के कसने की गति तीव्रतर और मारक क्षमता अधिकाधिक घातक होती आई है ।

सम्पूर्ण विनाश की ओर हम सब धकेले जा रहे हैं, हम स्वयं को इस दिशा में धकेल रहे हैं । इसलिये आईये चक्रव्यूह की काट के लिये मन्थन बढायें, आदान-प्रदान बढायें ।

●व्यक्ति का स्वयं से हर समय पाला पड़ता है । व्यक्ति के अन्य व्यक्तियों से अनेकानेक प्रकार के सम्बन्ध सामान्य बात हैं । ऐसे में बद से बदतर होते हालात में स्वयं को दोष देना, अन्य व्यक्तियों को दोष देना स्वाभाविक है । परन्तु यह तो पीड़ित को, पीड़ितों को ही दोषी ठहराना है ।

मेहनतकश तो दमन-शोषण का शिकार रहे ही हैं । परन्तु, ढाई हजार वर्ष पूर्व राजकुमार सिद्धार्थ भी भिक्षु गौतम बना था । और, सम्राट चन्द्रगुप्त हर रात को कमरा बदल कर सोता था । आज मैनेजरों का नौकरी से निकाले जाना, चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टरों का जेल जाना सामान्य बात होती जा रही है । पद पर बैठे व्यक्ति बदलते रहते हैं । पद बने रहते हैं -- समस्या पद हैं । इस-उस को थानेदार बनाना अथवा थानेदारों को बदलने मे जुटना उलझते जाना है । थानेदारी को ही निशाने पर लाना बनता है । यह मेहनतकशों की मुक्ति के संग चन्द्रगुप्तों के लिये भी चैन की नींद के द्वार खोलेगा..... और सिद्धार्थ भी भिक्षु नहीं बनेंगे, जीवन शाप नहीं रहेगा इसलिये जीवन से मुक्ति-मोक्ष की कामना नहीं रहेगी ।

हमारे विचार से सामाजिक सम्बन्धों पर, सामाजिक प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करना और पीड़ित-सहपीड़ित के आधार पर आचार-विचार चक्रव्यूह में दरारें डालेंगे ।

●राजा-बादशाह की फौज में एक हजार सैनिक स्थाई तौर पर होना बड़ी बात थी । महल-किले वाले सम्राट भूदासों-किसानों-दस्तकारों द्वारा की जाती उपज का छठा हिस्सा सामान्य तौर पर लेते थे । भाप-कोयला आधारित कारखानों में मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का आधा हिस्सा हड़पे जाने ने सरकारों को 50 हजार की स्थाई फौज रखने की क्षमता दी । सन् 1890 में एक सरकार द्वारा एक लाख की स्थाई फौज बनाने के समाचार ने संसार में तहलका मचा दिया था । इधर पैट्रोल-डीजल, बिजली, इलेक्ट्रोनिक्स के दौर में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका अठानवे प्रतिशत हड़पा जा रहा है । पृथ्वी के संग अन्तरिक्ष तक का सैन्यीकरण.............

●आज जो किया जा रहा है उसका 95-98 प्रतिशत अनावश्यक, नुकसानदायक और खतरनाक है । पृथ्वी, अन्य जीव योनियों, स्वयं मानवों का दोहन-शोषण हमें इस हद तक ले आया है । यह परिणाम है सब के, सब कुछ के दोहन-शोषण पर आधारित "अच्छे जीवन" का -- सभ्यता, प्रगति और विकास का । पशुओं को दुहने के लिये नाथने से आरम्भ हुआ, दासों को दागने से होता, धरती को चीरती कृषि की राह ऊँच-नीच वाला ताना-बाना फैक्ट्री-पद्धति तक पहुँचा है । तीव्रतर गति, अधिकाधिक चमक-दमक, बढती मात्रा में उत्पादन...... यह पैमाने हैं वर्तमान में "अच्छे जीवन" के । "अच्छा जीवन" जिसमें बढती सँख्या में लोग फालतू आबादी में, कूड़ा-करकट में बदले जा रहे हैं । "अच्छा जीवन" जिसके दायरे में बने रहने की शर्त तन को ताने रखना और मन को मारते जाना है । "अच्छा जीवन" जिसके दायरे में बना रहना है तो व्यक्ति को अपने स्वयं के लिये भी समय नहीं रखना.....

इसलिये उथल-पुथल का स्वागत है । उथल-पुथल अन्य तरीकों से जीवन जीने के बारे में सोचने के अवसर प्रदान करती हैं । उथल-पुथल जीवन की नई पद्धति की सम्भावनायें बढाती हैं ।

नुकसानदायक और खतरनाक कार्य को बन्द करना कैसा रहेगा ? खटने के समय के घटने से कैसा लगेगा ? रेल बनों को मिली फुर्सत क्या गुल खिलायेगी ? कार्य का अड़तालिसवें-उन्नचासवें हिस्से में सिकुड़ जाना हवा-पानी-मिट्टी तक की सेहत में तत्काल सुधार लायेगा !

उथल-पुथल को प्रोत्साहित करने के लिये शुरुआत स्वयं से भी कर सकते हैं । तन को खींचने की बजाय आईये शरीर की सुनें और आराम के लिये मौके ढूँढें-बनायें । मन को मारने की जगह मन की सुनें । अपने आप के साथ सहज होना दूसरों के साथ सम्बन्धों के लिये पुख्ता आधार प्रदान करता है । हर सम्बन्ध को समय की आवश्यकता है । समय ***(बाकी पेज तीन पर)***

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

टाटा रायरसन मजदूर : "33 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं और कम्पनी ने स्वयं स्टाफ में 10-12 लोग रखे हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड आधे मजदूरों को ही देते हैं। जिन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते उन्हें नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते, फार्म भरते ही नहीं। जो सेफ्टी मन्थ मनाया जाता है उस मार्च महीने में इस वर्ष एक मजदूर का हाथ क्रेन के हुक और स्टील कॉयल के बीच दब गया। घायल मजदूर को ई.एस.आई. अस्पताल नहीं ले गये, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। एस्कोर्ट्स अस्पताल में उपचार करवा कर कुछ पैसे दे कर निकाल दिया। इसी फैक्ट्री में स्टील कॉयल में लिपट कर एक मजदूर की मृत्यु हो गई थी — कोई रिपोर्ट नहीं, किसी दस्तावेज में नाम नहीं, पैसों से मामला रफादफा। यहाँ ***मारुति सुजुकी, हीरो होण्डा, नील मैटल*** आदि के लिये अलग-अलग चौड़ाई व लम्बाई में स्टील कॉयल की कटाई होती है।"

ग्रैरिसन श्रमिक : "प्लॉट 99 संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे कार्य पर 26 दिन के 3500-3800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। अप्रैल और मई की तनखायें आज 20 जून तक नहीं दी हैं। यहाँ ***एल जी इलेक्ट्रोनिक्स*** तथा ***सैमसंग*** के टी वी एवं फ्रिज के हिस्से और वाहनों के मीटर बनते हैं। बारह घण्टे में एक कप चाय भी नहीं। पीने का पानी ठीक नहीं। लैट्रीन बहुत गन्दी।"

पाई प्रिसीजन कामगार : "प्लॉट 330 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर और 180 कैजुअल वरकर काम करते हैं। कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पिछले वर्ष मई माह में जाँच वाले आये उस दिन कम्पनी ने सब कैजुअल वरकरों को फैक्ट्री के बाहर रखा। जाँच के बारे में मैनेजमेन्ट को पहले से पता था इसलिये कैजुअलों को उस रोज रात 9 बजे से ड्युटी पर बुलाया था। इधर अप्रैल 09 से कैजुअल वरकरों में हैल्परों की तनखा 2500 और ऑपरेटरों की 2600-2700 रुपये की है — अप्रैल तक हैल्परों की तनखा 2200 रुपये थी। फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी*** के अल्युमिनियम के पुर्जे बनते हैं। सी एन सी विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी में दिन की 12½ घण्टे की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। स्थाई मजदूरों को कम्पनी एक कप चाय देती है पर कैजुअल वरकरों को यह भी नहीं देती। दो सौ मजदूरों के लिये मात्र दो लैट्रीन हैं।"

ऑटो लेक वरकर : "19/6 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में कार्य के दौरान एक मजदूर की तबीयत ज्यादा खराब हो गई। दिल्ली में सफदरजंग अस्पताल ले गये, वहाँ मृत्यु हो गई। मृत मजदूर के परिवार को आर्थिक सहायता के लिये कम्पनी तब तैयार हुई जब फैक्ट्री में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। मृत साथी के परिवार को एक दिन की दिहाड़ी मजदूर देंगे और उसकी दुगुनी राशि कम्पनी।"

हाई पोलीमर लैब मजदूर : "प्लॉट 6-7-8 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 18 जून को मजदूरों ने काम बन्द किया और आज 19 को भी काम बन्द है। कम्पनी की दुधौला गाँव वाली फैक्ट्री में भी मजदूरों ने काम बन्द कर रखा है। समझौते के लिये दबाव डालने के वास्ते 2008 में होली पर मजदूरों ने एक दिन काम बन्द किया तो कम्पनी ने 8 दिन की तनखा काट ली थी। आठ दिन के वह पैसे लेने, पाँच वर्ष पहले नौकरी से निकाले 17 मजदूरों को वापस ड्युटी पर लेने आदि के लिये मजदूरों ने यह काम बन्द किया है।"

ग्लोब कैपेसिटर श्रमिक : "30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 250 स्थाई मजदूर और 550 कैजुअल वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। कैजुअल वरकरों को 10 घण्टे काम के 120 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर 8 की बजाय 10 घण्टे प्रतिदिन काम पर 26 दिन के 3840 रुपये देते हैं। बारह घण्टे में 2 घण्टे को कम्पनी ओवर टाइम कहती है और इनका भुगतान भी सिंगल रेट से तथा चौकस नहीं रहो तो इन दो घण्टों को खा जाते हैं। तीन रजिस्टर बना रखे हैं। साहब लोग गाली देते हैं।"

इन्टरनेशनल एक्सपोर्ट (फोरजिंग) कामगार: "प्लॉट 196 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. 50 मजदूरों में 12 की और पी.एफ. किसी की नहीं। यहाँ ***न्यू एलनबरी, क्लच ऑटो*** आदि का काम होता है।"

स्काईटोन इलेक्ट्रीकल्स वरकर : "42-43 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा 3200-3500 रुपये है पर दिखाते 3840 रुपये हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि 3200-3500 में से काटते हैं पर 3840 अनुसार। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

स्काई फोर्ज मजदूर : "प्लॉट 47 रेलवे फाटक, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2800-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

नूकेम केमिकल कामगार : "54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में अप्रैल और मई की तनखायें आज 18 जून तक नहीं दी हैं। स्टाफ को तो मार्च की तनखा भी नहीं दी है।"

ऐस्को डाई कास्टिंग वरकर : "प्लॉट 37 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे 94 मजदूरों की तनखा 2500-3000 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

खन्ना इलेक्ट्रीकल-श्री इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 102 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों की तनखा 2700 रुपये और ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों की 2400 रुपये। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और 200-500 रुपये गड़बड़ कर खा जाते हैं। ठेकेदार और परसनल वाले गाली देते हैं। यहाँ ***ओरियन्ट पँखों*** के पुर्जे बनते हैं। पावर प्रेस, ड्रिल, पेन्ट शॉप हैं और 2400-2700 तनखा वाले 200 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

युनाइटेड कोर्स श्रमिक : "प्लॉट 151 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे 70 मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 2800-3200 रुपये देते हैं।"

दिल्ली में मजदूर... *(पेज चार का शेष)*

फैक्ट्री में हैल्परों को 10 रुपये प्रतिघण्टा, कारीगरों की तनखा 3000-5000 रुपये। डेढ सौ मजदूर हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पहले नाम ***बंगाल बुक बाइन्डिंग*** था। साहब चिल्लाते बहुत हैं।"

वीयरवैल मजदूर : "बी-134 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और जबरन रात 1 बजे तक रोकते हैं। बदतमीजी से पेश आते हैं, गाली देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रोटी के लिये दिये जाते 20 रुपये में पूरी प्लेट सब्जी भी नहीं मिलती। डेढ-दो सौ कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 158 रुपये। ठेकेदार के जरिये धागे काटने के लिये रखी 25 महिला मजदूरों की तनखा 1800-2000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

अमित गैस श्रमिक : "एल-2 मार्केट, डी डी ए फ्लैट्स कालकाजी से घरों को गैस सिलेन्डर पहुँचाने वाले मजदूरों की तनखा 3000 रुपये से शुरू होती है। गाड़ी से उतार कर, कन्धे पर लाद कर गैस सिलेन्डर घर पहुँचाने के लिये 3-4 मंजिल चढना भी पड़ जाता है। गर्मी में बहुत परेशानी।"

स्ट्रेन इम्ब्राइड्री कामगार : "ए-254 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है लेकिन हैल्परों की तनखा मात्र 2200 रुपये है और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। यहाँ ***एडी, त्रिमूर्ति*** आदि से कढाई के लिये माल आता है।"

ओयस्टर बाथ वरकर : "डी-73 ओखला फेज-1 में उत्पादन नहीं होता बल्कि माल चीन से आता है और यहाँ से बिक्री के लिये जगह-जगह पहुँचाया जाता है। पहले यहाँ 70 मजदूर थे पर अब 20 हैं -- गाजियाबाद भेज दिया है। हैल्परों की तनखा 2700 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। महीने में 40 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

गुड़गाँव में मजदूर

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : " 196 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को मई की तनखा 20 जून को जा कर दी और 3665 रुपये ही दी जबकि जनवरी 09 से हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये भी न्यूनतम वेतन 3841 रुपये निर्धारित है। हम कैजुअल मशीनें भी चलाते हैं और हमारी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। मई में किये ओवर टाइम के पैसे आज 27 जून तक नहीं दिये हैं। ऐसा कम्पनी की यहाँ चारों फैक्ट्रियों में है। हमें 6 महीने में निकाल ही देते हैं और पहले महीने की तनखा में से 150 रुपये यूँ ही काट लेते हैं। जब-तब पेमेन्ट में 500 रुपये तक की गड़बड़ी कर देते हैं और टोकने पर कहते हैं गलती हो गई – उन पैसों के लिये फिर चक्कर कटवाते हैं। और फिर, कैजुअल वरकरों के लिये पेन्शन योजना का कोई अर्थ नहीं है पर भविष्य निधि संगठन पेन्शन की आड़ में धोखाधड़ी कर हमारे प्रोविडेन्ट फण्ड का 40 प्रतिशत हड़प रहा है।"

अलंकार क्रियेशन श्रमिक : " 410 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं, कम्पनी ने स्वयं एक मजदूर भी नहीं रखा है। क्वालिटी कन्ट्रोल मैनेजर और जनरल मैनेजर जबरदस्ती काम करवाते हैं, गन्दी गालियाँ देते हैं, जी एम तो थप्पड़ भी मार देता है। सुबह 9 बजे काम आरम्भ करते हैं और अगले रोज सुबह 5½ बजे तक काम. ....महीने में तीन सौ-चार सौ घण्टे ओवर टाइम। सुबह 5½ बजे काम से छुट्टी देते हैं तब फक्ट्री से निकलने नहीं देते – 9 बजे से फिर काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ ***सोनाई, जैकजेग, मिगरोज*** का माल बनता है। बायर के आने पर बोर्ड पर तनखा 3841 रुपये लिख देते हैं जबकि देते 3590 रुपये हैं – इन 3590 में से ई.एस. आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं। पेमेन्ट में 200-400 रुपये की गड़बड़ भी करते हैं।"

ब्राउन स्वीक इन्वेस्टमेन्ट कामगार : "629 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 350 मजदूर दो ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं। ड्युटी सुबह 9 बजे आरम्भ होती है और छूटने का कोई समय तय नहीं है, रात 2 बजे तक काम। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3840 और सिलाई कारीगरों की 4100-4300 रुपये तथा ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं लेकिन......लेकिन 2-4 महीने में कार्ड बदल देते हैं, ठेकेदार कम्पनी का नाम बदल देते हैं और नौकरी छोड़ने पर इक्के-दुक्के मजदूर को ही फण्ड मिलता है, अधिकतर को नहीं। पानी ठीक नहीं। लैट्रीन गन्दी। साहब लोग बहुत बदतमीजी करते हैं।"

स्पार्क मजदूर : " 166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और अगले रोज की सुबह 4 तक रोक लेते हैं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और 200-300 रुपये की गड़बड़ भी। गाली देते हैं। हैल्परों की तनखा 3510 रुपये। मई की तनखा 20 जून को जा कर दी और ओवर टाइम के पैसे आज 27 जून तक नहीं दिये हैं। पीने का पानी ठीक नहीं, भोजन अवकाश के समय कभी-कभार बर्फ डाल देते हैं। एक हजार के करीब मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. 2-4 की ही। और, एक हजार के लिये मात्र एक लैट्रीन।"

सुरक्षा कर्मी : "एल-194 महिपालपुर, दिल्ली में कार्यालय वाली ***डेल्टा सेक्युरिटी*** आगरा-मुम्बई तक बीस हजार गार्ड उपलब्ध करवाती है। गुड़गाँव में पाँच सितारा होटल, मॉल, फैक्ट्रियों पर डेल्टा सेक्युरिटी के 1500 गार्ड हैं। हम गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में महीने के तीसों दिन ड्युटी करवाते हैं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 5000 रुपये। शुरू के 3-4 महीने तो ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू ही नहीं करते और फिर हेराफेरी कर इस मद में तनखा से 288 रुपये काटते हैं।"

कलमकारी श्रमिक : "383 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हम 500 मजदूरों के सम्मुख पीने के पानी की भारी समस्या है। महीने में 80-100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान डेढ की दर से।"

सुप्रिया ग्राफ कामगार : "531 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 80 सिलाई कारीगरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। मण्डी में माँग कम के कारण सिलाई कारीगरों का भाव गिरा हुआ है – बहुत कम पीस रेट पर काम करना पड़ रहा है। ड्युटी सुबह 9½ ने रात 8 की है। डेढ सौ मजदूरों में से 30 स्थाई को ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और बाकी को सिंगल रेट से।"

आईना फैशन वरकर : "893 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये और सिलाई कारीगर पीस रेट पर। साठ टेलरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पीने का पानी ठीक नहीं। लैट्रीन गन्दी। छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं।"

ऋद्धिमा एक्सपोर्ट श्रमिक : "662 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000-3200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। न्यूनतम वेतन 3841 का जिक्र करने पर गाली देते हैं। नौकरी छोड़ने पर 20-25 दिन किये काम के पैसे देते ही नहीं।"

कारीगर्स कामगार : "251 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में 150 घंण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। इनचार्ज धमकी-गाली देते हैं, मार भी देते हैं।"

ज्योति एपरेल्स वरकर : "158 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में पीने का पानी गर्म। जनवरी 09 से देय डी.ए. के 176 रुपये नहीं दिये हैं – मई की तनखा हैल्परों को 3665 और सिलाई कारीगरों को 3800 रुपये दी। कम्पनी कानूनन अनिवार्य बोनस नहीं देती। नौकरी छोड़ने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : "225 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे 400 मजदूरों से काम करवा कर पैसे नहीं देते। जनवरी में 25 दिन काम कर मैं गाँव गया था, लौट कर किये काम के पैसे माँगे तो इनकार कर दिया है।"

अनुरोध

फरीदाबाद में 10-12 जगह और ओखला (दिल्ली) तथा उद्योग विहार (गुड़गाँव) में 'मजदूर समाचार' बाँटने में हमें हर महीने 15 दिन लगते हैं। बाँटने में सहायता की जरूरत है। अपनी सुविधा अनुसार आप एक अथवा अधिक स्थानों पर 'मजदूर समाचार' बँटवाने में सहयोग कर सकते हैं। स्थान तथा दिन के बारे में हम से सम्पर्क करें।

'मजदूर समाचार' के कोई संवाददाता नहीं हैं। समय हो तो अखबार लेते समय अपनी बातें बतायें। पहले से लिख कर रखी सामग्री दें या फिर पत्र डालें।

हमारा प्रयास ' मजदूर समाचार' की महीने में 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का है। इच्छा अनुसार रुपये-पैसे के योगदान का स्वागत है।

उथल-पुथल... *(पेज एक का शेष)*

होने से, समय प्राप्त करने से प्यार, लगाव, आदर, सम्मान वाले रिश्तों की सम्भावनायें बनती हैं, बढती हैं। और, ऐसे सम्बन्ध उथल-पुथल को नये धरातल पर ले जा सकते हैं।

दस्तकारों, किसानों, दुकानदारों की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या उथल-पुथल को बढाती जायेंगी। मजदूरों का तीव्रतर शोषण और बढती अनिश्चितता-असुरक्षा विश्व-भर में उथल-पुथल बढाती जायेंगी। नई समाज रचना के लिये उथल-पुथल आवश्यक हैं, स्वागतयोग्य हैं।■

01.01.2009 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3840 रुपये (8 घण्टे के 148 रुपये); अर्धकुशल अ 3970 रुपये (8 घण्टे के 153 रुपये); अर्धकुशल ब 4100 रुपये (8 घण्टे के 158 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4230 रुपये (8 घण्टे के 163 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4360 रुपये (8 घण्टे के 168 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4490 रुपये (8 घण्टे के 173 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये कुछ पते :

1. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
   30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
2. श्रीमान मुख्य मन्त्री, हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ

दिल्ली में मजदूर

1.02.2009 से दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक 3934 रुपये (8 घण्टे के 151 रु.); अर्ध-कुशल श्रमिक 4100 रुपये (8 घण्टे के 158रु); कुशल श्रमिक 4358 रुपये (8 घण्टे के 168रु) | 25-50 पैसे के पोस्टकार्ड से शिकायत के लिये एक पता: श्रम आयुक्त, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली- 110054

यूनिस्टाइल मजदूर : "बी-51 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ***एलिजा*** के टी-शर्ट का रेट 28 रुपये लगाया तो सिलाई कारीगरों ने 13 जून को 3½ बजे काम बन्द कर दिया और 40 रुपये प्रति पीस माँगे। रविवार को काम पर गये ही नहीं और सोमवार, 15 जून को ड्युटी के लिये पहुँचे तो रेट 32 रुपये किया गया पर कारीगर राजी नहीं हुये। सिलाई बन्द रही तो एक बजे दर 35 रुपये की परन्तु इस पर भी कारीगरों ने काम आरम्भ नहीं किया। ठेकेदार के जरिये रखे मास्टर का दबाव बेअसर रहा......16 जून को भी सिलाई कारीगरों ने 12½ बजे तक मशीनें बन्द रखी तो कम्पनी द्वारा रखे इनचार्ज ने रेट 37 रुपये किया। इस पर भोजन अवकाश बाद कारीगरों ने काम शुरू किया। टेलरों द्वारा काम बन्द के दौरान फिनिशिंग में काम जारी रहा था पर ड्युटी 11 घण्टे की जगह 8 घण्टे हो गई थी। धागे काटने वाली 20 महिला मजदूरों की तनखा 2300-2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ओवर टाइम सिंगल रेट से। सिलाई कारीगरों में भी 40 में से 4 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

तिरुपति ड्रिन्क्स श्रमिक : "ई-32 ओखला फेज-2 में ***पेप्सी*** का गोदाम है। लॉरेन्स रोड स्थित फैक्ट्री से माल यहाँ आता है और पेप्सी की वर्दी में हम 500 वरकर इसे दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर फुटकर बिक्री के लिये पहुँचाते हैं। रोज 12-13 घण्टे की ड्युटी हो जाती है पर कोई ओवर टाइम नहीं देते। सरकार द्वारा 8 घण्टे के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन 12-13 घण्टे कार्य पर देते हैं। रोटी के लिये 15 रुपये देते हैं – 15 में ढाबे पर आधी प्लेट सब्जी मिलती है। श्रम विभाग में शिकायत की तो साहब बोले कि जिस स्थान पर 8 घण्टे ड्युटी पूरी हो जाती है वहीं पेप्सी बोतलों से लदी गाड़ी छोड़ कर अपने निवासों को चले जाओ......

कुमार ब्रॉदर्स कामगार : "बी-110 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 2 बजे तक काम के कारण मजदूर बीमार बहुत होते हैं। जिन 100 वरकरों की ई.एस.आई. नहीं है उन्हें उपचार के लिये पैसों की अतिरिक्त दिक्कत। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं पर तनखा कम है। सब 250 मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं, ठेकेदार नहीं हैं। हैल्परों की तनखा 3500 रुपये – धागे काटने वाली महिला मजदूरों की 3400 रुपये। स्थाई सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 150 रुपये और कैजुअल टेलरों को 8 घण्टे के 110 रुपये। पीने का पानी ठीक नहीं। लैट्रीन गन्दी। डायरेक्टर आते हैं तब गाली देते हैं।" ***महालक्ष्मी ऑफसेट वरकर:*** "जैड-29 ओखला फेज-2 स्थित

(बाकी पेज दो पर)

नोएडा में मजदूर

★टी वी, फ्रिज, वाशिंग मशीन, कम्प्युटर मॉनिटर आदि बनाती ***एल जी इलेक्ट्रोनिक्स*** फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट में ड्युटी कर रहा एक मजदूर 25 मई को आर वन लाइन पर मोल्ड मशीन में फँस गया। सिर में गहरी चोटें लगी, 29 मई तक बेहोश रहा। आर 2 लाइन पर एक अन्य मजदूर का हाथ कुचला गया।

★सूरजपुर-दादरी रोड, तिलपता स्थित ***डेन्सो*** फैक्ट्री में लाइन सिस्टम है और खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। रात 1 से सुबह 8 वाली शिफ्ट में बहुत परेशानी, साँय 4½ से रात 1 की शिफ्ट में भी भारी दिक्कत। आठ घण्टे में बहुत थक जाते हैं पर फिर उस के बाद जबरन रोकते हैं – महीने में 125 घण्टे तक ओवर टाइम, भुगतान दुगुनी दर से। यहाँ ***हीरो होण्डा, यामाहा, सुजुकी*** दुपहिया और ***मारुति सुजुकी*** आदि चार पहिया वाहनों के पुर्जे बनते हैं। कैजुअल को कम्पनी टेम्परेरी कहती है, 6 महीने के लिये रखती है, 1500 हैं और भर्ती बुलन्दशहर, कानपुर, आगरा, मथुरा, नोएडा आई.टी.आई. जा कर की जाती है। अप्रेन्टिसों के लिये भी कम्पनी आई.टी.आई. जाती है और एक वर्ष सिखाने की बजाय उन से उत्पादन कार्य करवाती है। अप्रेन्टिसों का भत्ता 3000 रुपये और कैजुअलों की तनखा 4500 रुपये – महीने में एक भी छुट्टी पर इन में से 500 रुपये तथा दिहाड़ी काट लेते हैं। सुबह 8 की ड्युटी में 7.50 से पहले फैक्ट्री के अन्दर जाओ, 7.51 पर पहुँचे तो वापस – काम की मजबूरी में फोरमैन अन्दर ले जाता है तो भी आधे दिन की दिहाड़ी काट लेते हैं। रात 1 बजे छूटते हैं तब डेढ-पौने दो तक फैक्ट्री से निकल पाते हैं। पंच करने वाली मशीन पर कार्ड के साथ उँगली भी लगानी पड़ती है और फिर गार्डों द्वारा तलाशी। यह अन्दर जाते और बाहर निकलते, दोनों समय। भीड़, धक्का-मुक्की होती है। ढाई हजार स्थाई मजदूरों में अधिकतर स्थानीय हैं, तनखा 15-20 हजार रुपये, कम्पनी को उत्पादन बहुत ज्यादा निर्धारित करने से रोकते हैं। मजदूरों और मैनेजरों की साझा कैन्टीन है। कम्पनी एक बार चाय-नाश्ता और एक बार चाय देती है। भोजन 5 रुपये में।

★ग्रेटर नोएडा में 133-134 सुतियाना स्थित ***सुप्रीम ऑफसैट प्रिन्टर्स*** फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1800-2000 रुपये और ऑपरेटरों की 3000-6000 रुपये। डेढ सौ मजदूर हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं; दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। गाली देते हैं, मारपीट भी।

ब्रिटेन में मजदूर

★डरावने निर्माण और ध्वंस के यन्त्रों की बड़ी निर्माता ***जे सी बी*** का मुख्यालय ब्रिटेन में है। जे सी बी की फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की सँख्या बहुत कम है – पुर्जे जोड़ कर मशीनें तैयार करने का अधिकतर कार्य कैजुअल वरकरों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों से करवाया जाता है और......और पुर्जे उन सैंकड़ों अन्य फैक्ट्रियों में बनवाये जाते हैं जहाँ मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। जे सी बी की ब्रिटेन में कई फैक्ट्रियाँ हैं और उन में स्थाई मजदूरों की सँख्या कम नहीं। अक्टूबर 08 में कम्पनी ने घोषणा की कि ब्रिटेन स्थित फैक्ट्रियों से 510 मजदूरों की छँटनी जरूरी है पर अगर मजदूर तनखा कम करवाने को राजी हो जायें तो 150 को ही निकाला जायेगा। यूनियन ने नौकरियाँ बचाने के नाम पर तनखा में कटौती का समर्थन किया। परन्तु अन्त की बजाय यह आरम्भ था..... वेतन कटौती और 150 को निकालने के कुछ दिन बाद, 13 नवम्बर को कम्पनी ने 399 अन्य मजदूरों को नौकरी से निकाला। फिर 12 जनवरी 09 को 700 और मजदूरों को निकाला। और फिर 16 फरवरी को 97 मजदूरों की नौकरी खाई.... यूनियन अफसोस व्यक्त करने से बहुत अफसोस व्यक्त करने तक पुहँची।

★***टाटा इन्डस्ट्रीज*** ने अप्रैल 08 में ***फोर्ड मोटर*** से ब्रिटेन स्थित ***जगुआर लैण्ड रोवर*** फैक्ट्रियों का नियन्त्रण प्राप्त किया और .... और तत्काल 600 मजदूरों की छँटनी की। फिर नवम्बर 08 में 850 मजदूरों को नौकरी से निकाला। और फिर, 15 जनवरी 09 को 150 वरकरों तथा 300 मैनेजरों को नौकरी से निकाला। काली का खप्पर भरता नहीं...... टाटा मैनेजमेन्ट ने कहा कि तनखा में कमी के लिये सहमत हो अन्यथा 800 मजदूरों तथा 300 स्टाफ वालों की नौकरियाँ जायेंगी। इस पर मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौता हुआ जिसका अर्थ है वर्ष में मजदूरों को 560 करोड़ रुपयों का नुकसान। और, ब्रिटेन में सरकार से 216 करोड़ रुपये की सहायता मिलने के बाद कम्पनी अध्यक्ष रतन टाटा ने 29 मार्च 09 को कहा कि सरकार ने 4000 करोड़ रुपये का कर्ज नहीं दिया तो जगुआर लैण्ड रोवर की ब्रिटेन स्थित फैक्ट्रियाँ बन्द करनी पड़ेंगी, बची हुई बारह हजार नौकरियाँ खत्म होंगी.......

★ब्रिटेन में ***होण्डा*** कम्पनी ने स्वीन्डन स्थित कार फैक्ट्री को फरवरी 09 में चार महीने के लिये बन्द किया। मजदूर ले-ऑफ पर। जून में फैक्ट्री में कार्य आरम्भ करने से पहले कम्पनी ने कहा कि मजदूर तनखा में तीन प्रतिशत कटौती के लिये सहमत हों अन्यथा 490 मजदूरों की नौकरियाँ जायेंगी। यूनियन ने तनखा में कमी का पक्ष लिया है ....

(जानकारियाँ "क्लास स्ट्रगल" और "वरकर्स फाइट" से ली हैं। सम्पर्क के लिये : BM WORKERS FIGHT, LONDON WCIN3XX, BRITAIN: ई-मेल <contact@w-fight.org>)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011